



त्रिलोचन के कृषक काव्य का पारिस्थितिकीय एवं सांस्कृतिक अनुशीलन

आलोचनात्मक शोध पत्र

श्रद्धा सिंह¹, डॉ. शिवांगी सिंह²

1. शोधार्थी, डॉ. के. एन. मोदी विश्वविद्यालय, निवाई, राजस्थान

2. शोध निर्देशिका, डॉ. के. एन. मोदी विश्वविद्यालय, निवाई, राजस्थान

सार

यह शोध-पत्र त्रिलोचन के कृषक-काव्य को केवल ग्रामीण जीवन के यथार्थ-वर्णन के रूप में नहीं, बल्कि मनुष्य, भूमि, जल, ऋतु, श्रम, जीव-जगत और सामुदायिक स्मृति के परस्पर संबंधों की काव्यात्मक संरचना के रूप में पढ़ता है। अध्ययन का केंद्रीय तर्क यह है कि त्रिलोचन के यहाँ किसान 'विषय' भर नहीं है वह प्रकृति के साथ श्रमशील सह-अस्तित्व का ज्ञान-स्रोत है। खेत उसके लिए उत्पादन-स्थल होने के साथ परिवार, भाषा, ऋतु-अनुभव, सामाजिक विषमता और सांस्कृतिक उत्तराधिकार का जीवित परिसर है। इस दृष्टि से उनकी कविता में पारिस्थितिकी बाहरी दृश्य नहीं, कृषक-जीवन की भौतिक और नैतिक शर्त है।

पाठ-विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि त्रिलोचन प्रकृति का रोमानीकरण नहीं करते। वर्षा, धूप, मिट्टी, नदी, फसल और पशु जीवनदायी हैं, किंतु इनके साथ अकाल, भूख, कर्ज, बेदखली, श्रम-विभाजन और असमानता भी जुड़ी है। उनकी ग्राम-दृष्टि में उत्सव और आत्मीयता के साथ जातिगत अनुक्रम, अशिक्षा, प्रवासन और आर्थिक विवशता उपस्थित रहते हैं। इसलिए कृषक-संस्कृति का उनका रूपांकन न तो अतीत-मोह है और न लोक का सजावटी उपयोग वह परिवर्तनशील ग्रामीण समाज का आलोचनात्मक अभिलेख है।

शोध में पारिस्थितिकीय आलोचना, सांस्कृतिक अध्ययन और निकट-पाठ की संयुक्त पद्धति अपनाई गई है। 'उस जनपद का कवि हूँ', 'चंपा काले काले अच्छर नहीं चीन्हती' और 'नगई महरा' जैसी रचनाओं के साथ प्रमुख काव्य-संग्रहों को आधार बनाया गया है। निष्कर्षतः त्रिलोचन का कृषक-काव्य हिंदी की पर्यावरणीय चेतना को सामाजिक न्याय, श्रम-गरिमा और भाषिक बहुलता से जोड़ता है। वर्तमान जलवायु संकट और कृषि-संकट के समय यह कविता विकास, प्रकृति और मनुष्य के संबंध पर पुनर्विचार की महत्वपूर्ण वैचारिक भूमि प्रदान करती है।

कुंजी शब्दरू त्रिलोचन, कृषक-काव्य, पारिस्थितिकी, ग्राम-संस्कृति, श्रम, लोकभाषा, पर्यावरणीय न्याय।

1 प्रस्तावना

हिंदी कविता में गाँव और किसान की उपस्थिति लंबी परंपरा का हिस्सा है, पर प्रत्येक कवि की ग्राम-दृष्टि समान नहीं होती। कहीं गाँव स्मृति और सौंदर्य का स्थल है, कहीं राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की आधारभूमि, और कहीं शोषण से पीड़ित समुदाय का संकेत। त्रिलोचन की विशिष्टता यह है कि वे किसान को बाहर से देखने वाले पर्यवेक्षक की मुद्रा नहीं अपनाते। उनके शब्द खेत, खलिहान, नदी, पगडंडी, घरेलू बातचीत और मेहनतकश लोगों की देहगत लय से निर्मित होते हैं। उनका जन्म और आरंभिक जीवन पूर्वी उत्तर प्रदेश के ग्रामीण परिवेश से जुड़ा थाय प्रकाशित कृतियों और जीवन-वृत्त में भी सुलतानपुर की ग्रामभूमि तथा बहुभाषिक शिक्षा का उल्लेख मिलता है [1]। इसलिए उनकी कविता में ग्रामीण अनुभव जानकारी नहीं, जीवन-संस्कार के रूप में आता है।

त्रिलोचन की काव्य-यात्रा 'धरती' से 'जीने की कला' तक कई दशकों में फैली है। 'प्रतिनिधि कविताएँ' के प्रकाशकीय परिचय में उनके काव्य का एक सिरा गाँव की ऊबड़-खाबड़ धरती और दूसरा कलात्मक अनुशासन से जोड़ा गया है [2]। यह टिप्पणी कृषक-काव्य की संरचना समझने में उपयोगी है। उनकी सहज भाषा के भीतर अनुभव की अनेक परतें हैं। भूमि पर निर्भरता, मौसमी अनिश्चितता, श्रम का सौंदर्य, भूख की कठोरता, जातिगत दूरी, विस्थापन का दबाव और बोलियों की सांस्कृतिक गरिमा। कविता इन परतों को किसी घोषणापत्र की तरह नहीं, पात्रों, संवादों और दृश्यांशों के माध्यम से खोलती है।

पारिस्थितिकीय अनुशीलन का अर्थ यहाँ केवल पेड़-पौधों या ऋतुओं की सूची बनाना नहीं है। पारिस्थितिकी संबंधों का विज्ञान हैय साहित्यिक अध्ययन में यह पूछती है कि मनुष्य स्वयं को प्रकृति से अलग मानता है या उसके तंत्र का अंग, संसाधनों पर किसका अधिकार है, पर्यावरणीय क्षति का भार कौन वहन करता है, और भाषा प्रकृति को किस मूल्य-दृष्टि से व्यक्त करती है [3]। त्रिलोचन के कृषक पात्र इन प्रश्नों को अपने दैनिक श्रम में जीते हैं। वे मिट्टी, पशु, पानी और मौसम से निरंतर संवाद करते हैं, पर उत्पादन के साधनों और सामाजिक प्रतिष्ठा पर उनका नियंत्रण सीमित हो सकता है।

सांस्कृतिक अनुशीलन इस पारिस्थितिक संबंध में भाषा, जाति, वर्ग, परिवार, लोकाचार, त्योहार, सामुदायिक स्मृति और सत्ता को जोड़ता है। रेमंड विलियम्स ने गाँव और नगर की साहित्यिक छवियों को ऐतिहासिक आर्थिक संबंधों से पढ़ने की आवश्यकता बताई है [4]। त्रिलोचन के यहाँ भी ग्राम और नगर दो बंद संसार नहीं हैंय कलकत्ता जैसे शहर की ओर प्रवासन, बाजार से जुड़ी आकांक्षाएँ और शिक्षा का अभाव गाँव के भीतर शहर की उपस्थिति दर्ज कराते हैं। अतः कृषक-काव्य एक साथ स्थानीय और आधुनिक है।

2 शोध समस्या उद्देश्य और पद्धति

त्रिलोचन पर उपलब्ध आलोचना ने उनकी जनपक्षधरता, प्रगतिशीलता, सॉनेट-प्रयोग, भाषा और ग्राम्य जीवन पर पर्याप्त ध्यान दिया है। फिर भी कृषक-काव्य के पारिस्थितिकीय और सांस्कृतिक पक्षों को एक संयुक्त ढाँचे में पढ़ना अपेक्षाकृत कम दिखाई देता है। सामान्यतः प्रकृति-वर्णन को पर्यावरणीय चेतना मान लेने या किसान के चित्रण को वर्गीय यथार्थ तक सीमित कर देने से कविता की संबंधपरक जटिलता घट जाती है। इस शोध की समस्या यही है कि त्रिलोचन के कृषक-काव्य एक साथ स्थानीय और आधुनिक है।

षक—संसार में प्रकृति, श्रम और संस्कृति किस प्रकार एक—दूसरे का निर्माण करते हैं, तथा यह अंतर्संबंध कविता की भाषा, रूप और नैतिक दृष्टि को कैसे प्रभावित करता है।

अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य हैंरु त्रिलोचन के कृषक—काव्य में भूमि, जल, ऋतु, वनस्पति और जीव—जगत की भूमिका पहचाननाय कृषक श्रम और पर्यावरणीय ज्ञान के संबंध का विश्लेषण करनाय ग्राम—संस्कृति में भाषा, जाति, वर्ग, स्त्री, परिवार और प्रवासन की अंतःक्रिया समझनाय चयनित कविताओं की कथात्मक और भाषिक संरचना को पारिस्थितिक संवेदना से जोड़नाय तथा समकालीन कृषि और जलवायु संकट के संदर्भ में इस काव्य की प्रासंगिकता का मूल्यांकन करना।

शोध गुणात्मक और व्याख्यात्मक है। प्राथमिक सामग्री के रूप में त्रिलोचन के प्रमुख संग्रहकृ'धरती', 'दिगंत', 'ताप के ताए हुए दिन', 'शब्द', 'उस जनपद का कवि हूँ', 'चौती' और चयनित प्रतिनिधि कविताएँकृग्रहण किए गए हैं [1][2][5]। निकट—पाठ में बिंब, शब्दावली, वक्ता, पात्र, संवाद, स्थान और मौन पर ध्यान दिया गया है। द्वितीयक सामग्री में त्रिलोचन पर आलोचनात्मक संकलन, पारिस्थितिकीय आलोचना के आधार—ग्रंथ और ग्राम—नगर संबंध पर सांस्कृतिक अध्ययन सम्मिलित हैं [3][4][6]।

पद्धति की एक आवश्यक सावधानी यह है कि आज की 'पर्यावरण' शब्दावली को यांत्रिक ढंग से पुराने पाठ पर आरोपित न किया जाए। त्रिलोचन की कविताएँ आधुनिक पर्यावरण आंदोलन की तकनीकी भाषा नहीं बोलतीय वे जीवन—व्यवहार में निहित पारिस्थितिक बुद्धि दिखाती हैं। किसान मौसम को आँकड़े की तरह नहीं, बुवाई, सिंचाई, पशु—देखभाल और अन्न—सुरक्षा के अनुभव के रूप में समझता है। इसी प्रकार 'संस्कृति' को केवल त्योहार या रीति नहीं माना गया, बल्कि अर्थ—उत्पादन की वह संपूर्ण प्रक्रिया माना गया है जिसमें भाषा, श्रम, सामाजिक प्रतिष्ठा और स्मृति शामिल हैं।

यह अध्ययन प्रतिनिधि रचनाओं पर केंद्रित है, इसलिए इसे त्रिलोचन के समूचे काव्य का अंतिम सर्वेक्षण नहीं कहा जा सकता। फिर भी चयनित कविताएँ उनके कृषक—संसार के केंद्रीय रूपों को पर्याप्त स्पष्टता से सामने लाती हैं। उद्धृत पंक्तियाँ संक्षिप्त रखी गई हैं और विश्लेषण में कविता के व्यापक संदर्भ को प्राथमिकता दी गई है।

3 पारिस्थितिकीय आलोचना और पर्यावरणीय न्याय

पारिस्थितिकीय आलोचना साहित्य और भौतिक पर्यावरण के संबंध का अध्ययन करती है। ग्लॉटफेल्टी के अनुसार इसका मूल प्रश्न यह है कि प्रकृति पाठ में किस रूप में उपस्थित है और मानवीय संस्कृति भौतिक संसार से कैसे जुड़ती है [3]। इस दृष्टि को केवल 'हरित' सौंदर्य तक सीमित रखना पर्याप्त नहीं। लॉरेंस बुएल ने पर्यावरण—उन्मुख पाठ की पहचान में गैर—मानवीय संसार की स्वतंत्र उपस्थिति, पर्यावरण के प्रति मानवीय उत्तरदायित्व और प्रक्रिया के रूप में प्रकृति पर बल दिया है [7]। त्रिलोचन के यहाँ खेत या नदी पृष्ठभूमि नहींय पात्रों की जीविका, गति, स्मृति और भाषा को नियोजित करने वाली सक्रिय शक्तियाँ हैं।

कृषक समाज में पर्यावरणीय संकट समान रूप से वितरित नहीं होता। कम भूमि वाले किसान, खेतिहर मजदूर, दलित समुदाय और प्रवासी परिवार वर्षा की विफलता, फसल के नुकसान या संसाधन—अभाव का अधिक भार उठाते हैं। इसीलिए पर्यावरणीय न्याय का प्रश्न प्राकृतिक संकट को सामाजिक संरचना से जोड़ता है। रामचंद्र गुहा ने पर्यावरणवाद की विविध सामाजिक धाराओं पर विचार करते हुए यह दिखाया है कि संसाधनों और आजीविका का प्रश्न गरीब समुदायों

के लिए केंद्रीय है [8]। त्रिलोचन की कविता में भूख, नग्नता और श्रम का उल्लेख इसी सामाजिक पारिस्थितिकी की ओर संकेत करता है।

यहाँ 'धरती' द्विअर्थी है। वह जीवनदायिनी भूमि है, पर संपत्ति और नियंत्रण का प्रश्न भी उसी से जुड़ा है। किसान का आत्मीय संबंध मिट्टी से है, किंतु इस आत्मीयता को रोमानी बनाकर उसके श्रम और अधिकार की समस्या नहीं मिटाई जा सकती। त्रिलोचन धरती को मातृ-रूपक में स्थिर नहीं करते उससे जोतने, सहने, बोने, प्रतीक्षा करने और बाँटने की क्रियाओं में प्रकट करते हैं। इस क्रियात्मकता से प्रकृति गतिशील और इतिहास-सापेक्ष बनती है।

पारिस्थितिकीय पाठ में भाषा भी महत्वपूर्ण है। 'मानक' भाषा अक्सर स्थानीय वनस्पतियों, कृषि-क्रियाओं और सूक्ष्म ऋतु-अनुभवों के लिए उपलब्ध लोकशब्दों को हाशिए पर डाल देती है। त्रिलोचन का अवधी और बोलचाल से संवाद पर्यावरणीय ज्ञान का संरक्षण करता है। शब्द केवल शैलीगत रंग नहीं हैं वे विशेष भू-दृश्य, काम की विधि और समुदाय की स्मृति को सँजोते हैं। किसी स्थानीय शब्द का लोप कई बार उस अनुभव-पद्धति के लोप का सूचक होता है जिसे वह नाम देता था।

4 त्रिलोचन का काव्य व्यक्तित्व और जनपदीय दृष्टि

त्रिलोचन का काव्य-व्यक्तित्व प्रगतिशील जनचेतना और शिल्पगत अनुशासन का विशिष्ट मेल है। वे सॉनेट जैसी आयातित काव्य-विधा को हिंदी की बोलचाल, जनपदीय अनुभव और सामाजिक प्रश्नों के अनुकूल बनाते हैं। दूसरी ओर लंबी कथात्मक कविताओं में वे पात्रों की बोली, विराम और सामुदायिक टिप्पणियों को स्थान देते हैं। यह बहुरूपता बताती है कि कृषक जीवन को व्यक्त करने के लिए एक ही शैली पर्याप्त नहीं। खेत की लय, बातचीत की गति, स्मृति की टूटन और आर्थिक दबाव अलग-अलग संरचनाएँ माँगते हैं।

'जनपद' उनके यहाँ प्रशासनिक जिला नहीं, संबंधों का सांस्कृतिक भूगोल है। उसमें गाँव, खेत, नदी, बाजार, रास्ते, जातिगत बस्तियाँ, काम की जगहें और बाहर गए लोगों की स्मृतियाँ शामिल हैं। कवि जब स्वयं को जनपद से जोड़ता है, तो प्रतिनिधित्व का नैतिक दायित्व स्वीकार करता है। वह समुदाय को सुंदर दृश्य में बदलकर उपभोग नहीं करता, बल्कि उसकी भूख और अज्ञान के बीच अपनी कविता की सीमाओं को भी पहचानता है।

इस नैतिक स्थिति का संक्षिप्त उद्घोष प्रसिद्ध पंक्ति में है उस जनपद का कवि हूँ जो भूखा दूखा है [9]। 'भूखा दूखा' भाषा-वैज्ञानिक दृष्टि से भी ध्यान देने योग्य है। मानक गद्य का 'भूखा और दुखी' यहाँ लोक-उच्चारण और युग्म की ध्वनि में बदल जाता है। एक छोटा पद आर्थिक अभाव, शारीरिक कष्ट और दीर्घकालिक उपेक्षा को साथ रखता है। कवि की आत्मपहचान किसी साहित्यिक मंडली से नहीं, इसी वंचित भूगोल से निर्धारित होती है।

फिर भी प्रतिनिधित्व में दया-भाव प्रधान नहीं है। किसान त्रिलोचन के यहाँ करुणा का निष्क्रिय पात्र नहीं वह श्रम करता, निर्णय लेता, बोलता, विरोध करता और कभी अपनी परिस्थितियों के भीतर समझौता भी करता है। उसकी गरिमा उसके 'निर्दोष' होने से नहीं, उसके जटिल मनुष्य होने से आती है। यही कारण है कि त्रिलोचन का ग्राम संसार आदर्श ग्राम नहीं बनता। उसमें आपसी सहयोग है तो सामाजिक निगरानी भीय उत्सव है तो बहिष्कार की संभावना भीय प्रकृति का सौंदर्य है तो भूख की कठोरता भी।

जनपदीय दृष्टि स्थानीय होकर संकीर्ण नहीं होती। विशिष्ट स्थान के गहरे अनुभव से कविता व्यापक मानवीय प्रश्नों तक पहुँचती है। भूमि से बेदखली, श्रम का अवमूल्यन, शिक्षा से दूरी और शहर की ओर प्रवासन अनेक समाजों के साझा अनुभव हैं। त्रिलोचन इन प्रश्नों को अमूर्त सार्वभौमिकता में नहीं, नामधारी पात्रों और पहचानी जा सकने वाली परिस्थितियों में रखते हैं।

5 कृषक जीवन और श्रम की पारिस्थितिकी

“मिल कर वे दोनों प्रानी

दे रहे खेत में पानी”

— त्रिलोचन, ‘धरती’ के कृषक-जीवन संबंधी काव्यांश [2]

इन दो पंक्तियों में क्रिया ‘दे रहे’ केंद्र में हैय खेत अपने-आप फलने वाला रमणीय दृश्य नहीं, सिंचाई माँगने वाला जीवित उत्पादन-क्षेत्र है। ‘दोनों’ श्रम की साझेदारी दर्ज करता है और ‘प्रानी’ मनुष्य को किसी ऊँचे दार्शनिक पद पर नहीं बैठाता। वह भी जल, मिट्टी और फसल के उसी जीवन-क्रम का एक अंग है। इस छोटे दृश्य में त्रिलोचन की पारिस्थितिक दृष्टि का आधार मिलता हैरू प्रकृति और मनुष्य का संबंध उपभोग का एकतरफा संबंध नहीं, श्रम, प्रत्युत्तर और परस्पर निर्भरता का संबंध है।

पंक्ति की साधारण बोलचाल उसकी आलोचनात्मक शक्ति है। सिंचाई का श्रम सामान्यतः कृषि-विवरण की पृष्ठभूमि में छूट जाता हैय कविता उसे अग्रभूमि में लाकर अन्न के पीछे छिपे समय, देह और जल-संसाधन को दृश्य बनाती है। इसलिए खेत का सौंदर्य श्रम को ढँकता नहीं, उसी से उत्पन्न होता है।

कृषि प्रकृति पर निर्भर उत्पादन है, पर यह निर्भरता निष्क्रिय नहीं। किसान मिट्टी तैयार करता है, बीज चुनता है, समय पहचानता है, जल का प्रबंध करता है और पशुओं व औजारों के साथ काम करता है। इन क्रियाओं में शरीर और पर्यावरण का निरंतर संवाद है। त्रिलोचन के कृषक-काव्य में श्रम इसी संवाद की मूर्त अभिव्यक्ति है। पसीना, धूप, थकान और प्रतीक्षा प्रकृति से संघर्ष मात्र नहीं, उसके चक्रों के भीतर मनुष्य की भागीदारी हैं।

श्रम को केवल आर्थिक श्रेणी में पढ़ने से उसकी पारिस्थितिक बुद्धि छूट सकती है। खेत का काम ऋतु, नमी, हवा, पशु-व्यवहार और पौधों की अवस्था का सूक्ष्म निरीक्षण माँगता है। यह ज्ञान अक्सर लिखित ग्रंथों में नहीं, पीढ़ियों के अभ्यास और स्थानीय भाषा में संरक्षित रहता है। त्रिलोचन जब किसान की बोलचाल को कविता में प्रतिष्ठा देते हैं, तो वे उस ज्ञान को भी साहित्यिक मान्यता देते हैं जिसे आधुनिक ज्ञान-वर्गीकरण ‘अनपढ़’ कहकर नकार सकता है।

कृषक श्रम सामूहिक भी है। परिवार के सदस्य, पड़ोसी, मजदूर और पशु उत्पादन-प्रक्रिया में सहभागी होते हैं। इस सामूहिकता के भीतर समानता हमेशा नहीं होतीय काम और प्रतिफल का वितरण जाति, वर्ग और लिंग से प्रभावित होता है। त्रिलोचन की कविता की शक्ति इस बात में है कि वह सामुदायिकता का उत्सव मनाते हुए भी उसके अंतर्विरोधों को पूरी तरह ढकती नहीं। ‘नगई महारा’ जैसे पात्र सामाजिक ताने-बाने के भीतर श्रम, जातिगत पहचान और नैतिक निर्णय के जटिल संबंध खोलते हैं [10]।

श्रम की पारिस्थितिकी में समय की भूमिका भी विशिष्ट है। औद्योगिक समय घड़ी की समान इकाइयों में मापा जाता है, जबकि कृषि समय ऋतु और जैविक प्रक्रिया से बँधा है। बीज को अंकुर बनने, फसल को पकने और वर्षा को आने के

लिए प्रतीक्षा चाहिए। यह प्रतीक्षा किसान की चिंता भी है और आशा भी। कविता में गति का धीमापन, विवरण और संवाद इस कृषि-समय को रूप देते हैं।

त्रिलोचन श्रम का महिमामंडन करके पीड़ा को स्वाभाविक नहीं बनाते। यदि किसान के कठोर श्रम के बाद भी भूख और अभाव बने रहते हैं, तो समस्या प्रकृति की कमी भर नहीं, सामाजिक वितरण की असमानता है। यहाँ श्रम-गरिमा और न्याय की माँग एक-दूसरे से जुड़ती हैं। यही बिंदु उनके कृषक-काव्य को पर्यावरणीय न्याय की समकालीन बहस से जोड़ता है।

6 भूख अभाव और पर्यावरणीय असमानता

“उस जनपद का कवि हूँ

जो भूखा दूखा है”

— त्रिलोचन, ‘उस जनपद का कवि हूँ’ [9]

यहाँ ‘मैं’ का काव्यात्मक अधिकार ‘उस जनपद’ के प्रति जवाबदेही से बनता है। ‘उस’ दूरी का सूचक होते हुए भी कवि की संबद्धता को कम नहीं करता। उलटे, वह साहित्यिक केंद्र और भूखे जनपद के बीच असमान दृश्यता पर ध्यान खींचता है। ‘भूखा-दूखा’ में जैविक आवश्यकता और सामाजिक पीड़ा एक संयुक्त लोकपद में आती हैं। यह युग्म बताता है कि पर्यावरणीय संसाधन उपलब्ध होना और उन पर न्यायपूर्ण अधिकार होना अलग बातें हैं।

भूख त्रिलोचन के कृषक-संसार की निर्णायक अनुभूति है। यह विडंबना है कि अन्न उगाने वाला समुदाय स्वयं अन्न-सुरक्षा से वंचित हो सकता है। कविता जब ‘भूखा दूखा’ जनपद कहती है, तब वह कृषि-समृद्धि के राष्ट्रीय आख्यान और कृषक की वास्तविक दशा के बीच अंतर उजागर करती है। भूख प्राकृतिक नियति नहीं, भूमि-संबंध, मजदूरी, बाजार, ऋण और वितरण-व्यवस्था से निर्मित सामाजिक परिणाम है।

पर्यावरणीय असमानता का अर्थ है कि प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता और पर्यावरणीय जोखिम का भार अलग समुदायों पर असमान हो। सिंचाई-सुविधा, उपजाऊ भूमि, पशु-संपदा या भंडारण तक पहुँच सीमित होने पर छोटी पर्यावरणीय बाधा भी गरीब किसान के लिए जीवन-संकट बन सकती है। इसके विपरीत अधिक संसाधन वाला वर्ग नुकसान को सह सकता है। त्रिलोचन तकनीकी आँकड़े नहीं देते, पर पात्रों की देह, भोजन, वस्त्र और बातचीत के माध्यम से इस असमानता को संवेदनात्मक रूप देते हैं।

अभाव का चित्रण उनकी कविता में निरीहता पैदा करने के लिए नहीं है। पात्रों की वाणी और आत्मसम्मान पाठक को नैतिक असुविधा में डालते हैं। पाठक उनके कष्ट को दूर से देखकर द्रवित हो और फिर भूल जाएँ। कविता ऐसी सरल मुक्ति नहीं देती। वह पूछती है कि कला उस व्यक्ति के लिए क्या कर सकती है जिसे रोजी, भोजन और शिक्षा की तत्काल आवश्यकता है। ‘वह नहीं मानता कविता कुछ भी दे सकती है’ जैसी पंक्ति काव्य की सामाजिक उपयोगिता पर आत्मालोचनात्मक प्रश्न है [9]।

यह प्रश्न कृषक-काव्य की सौंदर्य-दृष्टि को बदल देता है। सुंदरता खेत के रंग या ऋतु की रमणीयता में ही नहीं, प्रतिकूलता के बीच काम करते मनुष्य की दृढ़ता में भी है। किंतु दृढ़ता को ऐसी प्रशंसा में बदलना अनुचित होगा जो

अन्याय को स्थायी बना दे। त्रिलोचन की करुणा परिवर्तन की माँग से जुड़ी है वह पीड़ा को 'लोकजीवन की सहजता' कहकर सामान्य नहीं करती।

भूख और पर्यावरण का संबंध आज जलवायु परिवर्तन के संदर्भ में और स्पष्ट है। अनियमित वर्षा, तापमान-वृद्धि और फसल-जोखिम का पहला असर उन परिवारों पर पड़ता है जिनके पास बचत और वैकल्पिक आय कम है। त्रिलोचन का काव्य आधुनिक जलवायु-विज्ञान का पूर्वानुमान नहीं, पर वह संकट की सामाजिक संरचना पहचानने की संवेदना देता है। इसीलिए उसकी प्रासंगिकता वर्णन से अधिक नैतिक और पद्धतिगत है।

7 धरती मिट्टी और स्थानबोध

त्रिलोचन के काव्य में धरती एक केंद्रीय शब्द और अनुभव है। उनके आरंभिक संग्रह का नाम ही 'धरती' है [1]। यह नामकरण प्रकृति के किसी निराकार रूप की बजाय उस ठोस आधार पर ध्यान खींचता है जिस पर कृषक जीवन टिका है। मिट्टी शरीर को भोजन देती है, पर वह श्रम, स्वामित्व, वंश-स्मृति और निवास की राजनीति से भी जुड़ी है। इसलिए धरती का बिंब सौंदर्य, अर्थव्यवस्था और पहचानकृतीनों को एक साथ सक्रिय करता है।

स्थानबोध किसी भूगोल को देखकर उसका वर्णन करने से नहीं बनता। वह बार-बार चलने, काम करने, नाम देने और याद रखने से पैदा होता है। किसान पगडंडी, मेड़, खेत की ढाल, जल के बहाव और मिट्टी के गुणों को अनुभव से पहचानता है। त्रिलोचन की जनपदीय शब्दावली पाठक को ऐसे स्थान में ले जाती है जहाँ दिशाएँ मानचित्र से कम और व्यवहार से अधिक निर्धारित होती हैं। यह 'स्थानीयता' आधुनिक पारिस्थितिक सोच का महत्वपूर्ण तत्व है, क्योंकि देखभाल प्रायः विशिष्ट स्थान के ज्ञान से आरंभ होती है।

भूमि से संबंध भावनात्मक है, किंतु उसका अधिकार असमान हो सकता है। भूमिहीन खेतिहर मजदूर भूमि पर सबसे अधिक श्रम करता है और स्वामित्व से सबसे दूर रह सकता है। छोटे किसान की भूमि ऋण या संकट से खतरे में पड़ सकती है। त्रिलोचन का कृषक-काव्य इस अंतर को प्रत्यक्ष नारे से अधिक जीवन-स्थितियों में व्यक्त करता है। धरती पर आत्मीयता तभी न्यायपूर्ण है जब श्रम करने वाले मनुष्य के अधिकार और जीवन-सुरक्षा को स्वीकार किया जाए।

मिट्टी का बिंब विनम्रता और चक्र का बोध भी देता है। बीज मिट्टी में दबकर अंकुरित होता है जैविक अवशेष लौटकर उर्वरता बनते हैं मनुष्य का जीवन भी धरती से अलग नहीं। पर कविता इस चक्र को दार्शनिक अमूर्तन में विलीन नहीं करती। बोआई का समय चूकने, वर्षा कम होने या फसल नष्ट होने की ठोस आशंका बनी रहती है। इससे धरती पवित्र प्रतीक होने के साथ जोखिम का क्षेत्र भी है।

त्रिलोचन की स्थान-संवेदना आज की विकास-चर्चा में प्रश्न उठाती है। जब भूमि को केवल विनिमय-मूल्य, परियोजना-क्षेत्र या उत्पादन-इकाई में बदला जाता है, तब उससे जुड़ी स्मृति, भाषा और पारिस्थितिक ज्ञान अदृश्य हो जाते हैं। कृषक-काव्य इस अदृश्य हानि को अनुभवयोग्य बनाता है।

8 जल ऋतु और कृषि समय

जल कृषि का मूल संसाधन है, पर कविता में उसका अर्थ केवल सिंचाई नहीं। नदी, वर्षा, नमी, प्यास और बहाव जीवन की गति तथा असुरक्षा दोनों व्यक्त करते हैं। कृषक की दृष्टि से वर्षा का सौंदर्य उसकी उपयोगिता और समय से अलग नहीं। बहुत कम वर्षा फसल को सुखाती है, अत्यधिक वर्षा नुकसान करती है, और असमय वर्षा तैयार फसल को बिगाड़ सकती है। इस प्रकार प्रकृति का अनुभव मात्र दृश्य-आनंद नहीं, सावधान मूल्यांकन है।

ऋतु कृषक-संस्कृति का कैलेंडर बनाती है। खेती की गतिविधियाँ, भोजन, उत्सव, गीत और घरेलू काम मौसम के साथ बदलते हैं। त्रिलोचन की कविताओं में ऋतु-संकेत सामाजिक समय को भी विन्यस्त करते हैं। खेत में काम की तीव्रता और अवकाश, बाहर गए व्यक्ति की प्रतीक्षा, परिवार की जरूरतें तथा गाँव के सामूहिक आयोजन मौसम से जुड़े हैं। यह संबंध बताता है कि संस्कृति प्रकृति के ऊपर रखी स्वतंत्र परत नहीं, वह पर्यावरणीय लयों के भीतर विकसित जीवन-पद्धति है।

आधुनिक कृषि ने पंप, नहर, रासायनिक निवेश और बाजार के माध्यम से ऋतु-निर्भरता को कुछ हद तक बदला है, पर समाप्त नहीं किया। त्रिलोचन का अधिकांश कृषक संसार उस संक्रमण की पृष्ठभूमि में पढ़ा जा सकता है जहाँ परंपरागत ज्ञान और बदलती अर्थव्यवस्था साथ मौजूद हैं। कविता किसी एक तकनीकी समाधान का समर्थन नहीं करती, वह निर्भरता, जोखिम और मनुष्य की सीमित शक्ति का अनुभव कराती है।

जल का सांस्कृतिक रूप भी महत्वपूर्ण है। नदी और कुएँ सामाजिक मिलन, श्रम और स्मृति के स्थल हो सकते हैं, पर जल-स्रोतों तक पहुँच जातिगत या लैंगिक नियमों से प्रभावित रही है। इस पहलू को पढ़ते समय ग्राम-सामुदायिकता का सरल उत्सव पर्याप्त नहीं। पर्यावरणीय संसाधन तभी साझा हैं जब उनका उपयोग न्यायपूर्ण हो। त्रिलोचन की पात्र-केंद्रित दृष्टि पाठक को इसी असमान साझेदारी पर विचार की ओर ले जाती है।

आज भूजल-क्षय, नदी-प्रदूषण और अनियमित मानसून के संदर्भ में कृषक काव्य की जल-संवेदना नया अर्थ ग्रहण करती है। कविता वैज्ञानिक रिपोर्ट का विकल्प नहीं, लेकिन आँकड़े से परे उस जीवन-जगत को सामने लाती है जिस पर जल-संकट का प्रभाव पड़ता है। वह नीति-विमर्श में अनुभव और गरिमा की भाषा जोड़ती है।

9 वनस्पति पशु और गैर मानवीय संसार

कृषक पर्यावरण मनुष्य अकेले नहीं बनाता। बीज, फसल, खरपतवार, पेड़, पक्षी, कीट, पशु और सूक्ष्म जीव उत्पादन और जीवन के सहचर हैं। साहित्यिक पाठ में इनकी उपस्थिति का मूल्य इस बात से तय नहीं होना चाहिए कि वे कितने रमणीय हैं। वे श्रम की दिशा, भोजन की उपलब्धता, रोग और मौसम की पहचान में सक्रिय भूमिका निभाते हैं। त्रिलोचन का ग्रामीण दृश्य इसी बहुजीवी संसार से बनता है।

पशु कृषक परिवार की अर्थव्यवस्था और संवेदना दोनों से जुड़े हैं। बैल या गाय केवल प्रतीक नहीं, श्रम, दूध, खाद और घरेलू दिनचर्या के अंग हैं। मनुष्य-पशु संबंध में उपयोगिता के साथ निर्भरता और देखभाल भी होती है। पारिस्थितिकीय दृष्टि इस पारस्परिकता को रेखांकित करती है, साथ ही यह भी पूछती है कि श्रम करने वाले पशु और मनुष्य दोनों की थकान को संस्कृति किस तरह देखती है।

वनस्पतियों और फसलों के स्थानीय नाम भू-दृश्य को विशिष्ट बनाते हैं। सामान्यीकृत 'हरियाली' की अपेक्षा नामित पौधा अधिक सांस्कृतिक स्मृति वहन करता है। उससे भोजन, औषधि, ऋतु और लोकविश्वास जुड़े हो सकते हैं। त्रिलोचन की भाषिक सजगता इस विशिष्टता को बचाती है। 'प्रतिनिधि कविताएँ' की भूमिका भी उनकी भाषा में बोली और संस्कृतकृत दोनों स्रोतों के सहज प्रवेश पर ध्यान देती है [2]। यह बहुभाषिकता जैविक विविधता के समान एक सांस्कृतिक विविधता रचती है।

गैर-मानवीय संसार को केवल मनुष्य की भावना का रूपक बनाना उसकी स्वतंत्रता कम कर सकता है। त्रिलोचन की कविता में प्रकृति भावों का माध्यम अवश्य है, पर वह अपनी भौतिकता नहीं खोती। धूप सचमुच शरीर को तपाती हैय मिट्टी में वास्तविक बीज लगता हैय पानी की कमी वास्तविक फसल को प्रभावित करती है। इस भौतिकता के कारण प्रकृति अलंकार के बाहर आकर जीवन की शर्त बनती है।

समकालीन पर्यावरणीय संकट में ऐसी दृष्टि उपयोगी है, क्योंकि जैव-विविधता की क्षति अंततः कृषि और खाद्य-सुरक्षा को प्रभावित करती है। त्रिलोचन का काव्य वैज्ञानिक शब्दावली न प्रयोग करते हुए भी मनुष्य को संबंध-जाल में स्थित करता है। यह मानव-केंद्रित अहंकार पर एक शांत किंतु प्रभावी प्रश्न है।

10 ग्राम संस्कृति समुदाय और अंतर्विरोध

“गाँव वाले इधर उधर कहते थे
नगई भगताया है”

— त्रिलोचन, ‘नगई महारा’ [10]

ग्राम-संस्कृति को अक्सर आत्मीयता, सामूहिकता और परंपरा के सकारात्मक बिंबों में प्रस्तुत किया जाता है। त्रिलोचन के यहाँ ये तत्व हैं, पर उनके साथ निगरानी, लोकापवाद, जाति-भेद और आर्थिक असमानता भी आती है। गाँव में व्यक्ति अकेला नहींय उसके निर्णय समुदाय की दृष्टि में होते हैं। यह सामुदायिक निकटता संकट में सहयोग दे सकती है और भिन्न आचरण पर दबाव भी बना सकती है।

यह आरंभ गाँव की संवाद-व्यवस्था खोलता है। ‘इधर उधर’ सूचना के प्रसार से अधिक सामाजिक निगरानी का नक्शा बनाता हैरु कोई एक वक्ता उत्तरदायी नहीं, किंतु सामूहिक कथन व्यक्ति की छवि तय कर देता है। ‘कहना’ यहाँ निरापद बातचीत नहीं, प्रतिष्ठा बनाने और बिगाड़ने की सांस्कृतिक शक्ति है। नगई का जीवन समुदाय की टिप्पणी में प्रवेश करता है, और कविता पाठक को उस निर्णय-प्रक्रिया का सहभागी तथा आलोचक दोनों बनाती है।

ग्राम संस्कृति में श्रम और अनुष्ठान का संबंध जटिल है। भोजन, जाति, विवाह, धार्मिक व्यवहार और पेशा सामाजिक स्थान निर्धारित कर सकते हैं। किसान या मजदूर की पहचान उसके काम से जुड़ी है, पर काम की उपयोगिता सम्मान की समानता सुनिश्चित नहीं करती। त्रिलोचन पात्र का नाम और बोली सुरक्षित रखते हुए उसे ‘प्रकार’ में विलीन होने से बचाते हैं। यही सांस्कृतिक आलोचना का महत्वपूर्ण पक्ष हैरु संरचना को पहचानना, पर व्यक्ति की विशिष्टता को न मिटाना।

सामुदायिक स्मृति मौखिक रूप से चलती है। घटनाएँ, व्यक्तियों के गुण, विवाद और कहावतें बातचीत में पीढ़ियों तक रह सकती हैं। त्रिलोचन की कथात्मक शैली इस मौखिकता को लिखित कविता में स्थान देती है। वाक्य कभी औपचारिक व्याकरण की अपेक्षा बोलने की गति का अनुसरण करते हैं। इससे पाठ केवल गाँव के बारे में नहीं रहताय वह ग्राम्य संवाद की प्रक्रिया का रूप ग्रहण करता है।

परंपरा को यहाँ स्थिर मानना भूल होगी। शहर की ओर जाना, शिक्षा की इच्छा, मजदूरी के नए अवसर और बाजार ग्राम जीवन को बदलते हैं। त्रिलोचन की कविता परिवर्तन को ‘शुद्ध संस्कृति’ के पतन की तरह नहीं देखतीय वह पूछती है कि परिवर्तन से किसे अवसर और किसे विस्थापन मिलता है। ग्राम संस्कृति की रक्षा का अर्थ इसलिए अन्यायपूर्ण संबंधों की रक्षा नहीं, बल्कि भाषा, स्मृति, सामुदायिक सहयोग और स्थानीय ज्ञान को न्यायपूर्ण रूप में जीवित रखना है।

11 लोकभाषा संवाद और सांस्कृतिक पारिस्थितिकी

“चंपा काले काले अच्छर
नहीं चीन्हती”

— त्रिलोचन, ‘चंपा काले काले अच्छर नहीं चीन्हती’ [11]

त्रिलोचन की कविता की सबसे चर्चित विशेषताओं में उनकी भाषा है। वे बोलचाल, अवधी, तत्सम शब्द, उर्दू और विविध भाषिक संस्कारों को प्रसंगानुकूल मिलाते हैं। यह मिश्रण सजावटी लोक-रंग नहीं, सामाजिक यथार्थ की संरचना है। पात्र जिस भाषा में बोलता है, उसी में उसका अनुभव, आत्मसम्मान और संसार-दृष्टि व्यक्त होती है। भाषा बदल देने पर केवल शब्द नहीं बदलते ज्ञान और संबंध की पूरी पद्धति बदल सकती है।

सांस्कृतिक पारिस्थितिकी का अर्थ यहाँ उन परिस्थितियों से है जिनमें भाषा जीवित रहती है। खेती की पद्धति, स्थानीय फसल, पशु-देखभाल, रिश्तेदारी और सामुदायिक काम अपने शब्द-संसार बनाते हैं। जीवन-पद्धति बदलने पर कई शब्द अप्रचलित हो जाते हैं। त्रिलोचन का काव्य ऐसे शब्दों को संग्रहालय में नहीं रखता उन्हें क्रिया और संवाद में सक्रिय करता है। इससे पाठक भाषा को जीवित पर्यावरण के रूप में अनुभव करता है।

आरंभिक पंक्ति में ‘काले काले’ अक्षर को अर्थ से पहले दृश्य वस्तु बनाता है। चंपा के लिए लिखावट ज्ञान का पारदर्शी माध्यम नहीं, अनपहचाने चिह्नों की सतह है। ‘अक्षर’ के स्थान पर ‘अच्छर’ और ‘पहचानती’ की जगह ‘चीन्हती’ का चयन चरित्र की वाणी को सुधारने की वस्तु नहीं बनाता। कविता अशिक्षा को केवल व्यक्तिगत कमी नहीं मानती वह उस व्यवस्था की ओर संकेत करती है जिसमें साक्षरता तक पहुँच असमान है। साथ ही चंपा की तीक्ष्ण समझ और निर्णय-क्षमता यह रोकती है कि पाठक निरक्षरता को बुद्धिहीनता समझ ले।

संवाद त्रिलोचन के यहाँ ज्ञान का लोकतांत्रिक रूप है। कवि पात्र पर भाषण नहीं देता उससे बात करता है, उसकी असहमति सुनता है और कई बार उसकी बात से अपनी धारणा बदलता है। यह काव्य-प्रक्रिया शोध की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। कृषक समुदाय को अध्ययन की निष्क्रिय वस्तु मानने के बजाय उसके अनुभव को ज्ञान के रूप में स्वीकार करना पर्यावरणीय और सांस्कृतिक न्याय की पहली शर्त है।

लोकभाषा का उपयोग पाठक से श्रम माँग सकता है। अपरिचित शब्द सहज संप्रेषण में बाधा लगते हैं, पर यही बाधा मानक भाषा के प्रभुत्व को प्रश्नांकित करती है। त्रिलोचन पाठक को स्थानीय संसार की ओर आने के लिए प्रेरित करते हैं वे पात्रों को शहरी पाठक की सुविधा के लिए पूर्णतः अनूदित नहीं कर देते। इस भाषिक नीति में सांस्कृतिक स्वायत्तता का संकेत है।

12 जाति वर्ग और कृषक समाज

‘किसान’ एक समान सामाजिक श्रेणी नहीं है। भूमिधर, बटाईदार, सीमांत किसान, खेतिहर मजदूर और परंपरागत सेवा-समुदायों की स्थितियाँ भिन्न होती हैं। जाति और वर्ग कई बार एक-दूसरे को मजबूत करते हैं, किंतु वे पूर्णतः समान भी नहीं। त्रिलोचन के नामधारी पात्रकृजैसे नगईकृषक समाज के भीतर इस विविधता को सामने लाते हैं। कविता का जनपद एकरूप ‘लोक’ नहीं, विभिन्न अधिकारों और प्रतिष्ठाओं से बना सामाजिक क्षेत्र है।

पर्यावरणीय संसाधनों का उपयोग भी सामाजिक संबंधों से नियंत्रित होता है। भूमि, जल-स्रोत, चराई, वन-उपज और रास्तों तक पहुँच के प्रश्न जातिगत सत्ता से अलग नहीं। कविता यदि खेत की सुंदरता दिखाए लेकिन खेत पर काम करने वाले शरीर की सामाजिक स्थिति छिपा दे, तो उसका पारिस्थितिक चित्र अधूरा रहेगा। त्रिलोचन की यथार्थ-दृष्टि इस शरीर को दृश्य बनाती है।

‘नगई महारा’ जैसी कविता का महत्व इस बात में है कि वह हाशिए के पात्र को केवल पीड़ा का प्रतीक नहीं बनाती। कथात्मक विस्तार उसकी सामाजिक दुनिया, निर्णय और समुदाय के साथ संबंध को विकसित करता है। पाठक को तैयार नैतिक निष्कर्ष देने के बजाय कविता सामाजिक व्यवहार की परतें खोलती है। यह पद्धति जाति-विमर्श के लिए उपयोगी है, क्योंकि भेदभाव केवल घोषित नियम में नहीं, संबोधन, अफवाह, भोजन और रोजमर्रा की दूरी में भी काम करता है।

वर्गीय शोषण का प्रश्न कृषक उत्पादन और बाजार के संबंध में उभरता है। किसान का श्रम अन्न पैदा करता है, पर मूल्य-निर्धारण और वितरण पर उसका नियंत्रण सीमित रह सकता है। अभाव को केवल व्यक्तिगत आलस्य या प्राकृतिक विपत्ति बताना संरचनात्मक कारणों को छिपाता है। त्रिलोचन की जनपक्षधरता व्यक्तिगत चरित्र-दोष की बजाय सामाजिक परिस्थिति को दृश्य बनाती है। प्रगतिशील आलोचना ने उनकी कविता के इसी आमजन-केंद्रित स्वर को रेखांकित किया है [12]।

फिर भी कविता को समाजशास्त्रीय दस्तावेज में सीमित नहीं करना चाहिए। उसका रूप, ध्वनि, पुनरावृत्ति, संवाद और विडंबना सामाजिक अनुभव को ऐसी तीव्रता देते हैं जो मात्र विवरण में संभव नहीं। जाति और वर्ग का विश्लेषण काव्यात्मकता के विरुद्ध नहीं। त्रिलोचन के यहाँ काव्यात्मकता उन्हीं संबंधों की सूक्ष्म अनुभूति से पैदा होती है।

13 स्त्री शिक्षा और प्रवासन

“कलकत्ते पर बजर पड़े”

— चंपा की उक्तिय त्रिलोचन, ‘चंपा काले काले अच्छर नहीं चीन्हती’ [11]

कृषक-संस्कृति के अध्ययन में स्त्री का श्रम प्रायः अदृश्य रह जाता है। घर, पशु, बीज-संरक्षण, पानी, ईंधन, भोजन और खेत से जुड़े अनेक काम स्त्रियाँ करती हैं, पर उन्हें ‘सहायता’ कहकर आर्थिक गणना से बाहर रखा जा सकता है। त्रिलोचन की चंपा जैसी पात्र ग्रामीण स्त्री के अनुभव को संवाद में लाती है। वह केवल करुणा की पात्र नहीं। प्रश्न का उत्तर देती, इच्छा व्यक्त करती और शहर के बारे में अपना नैतिक निर्णय बनाती है।

चंपा की निरक्षरता शिक्षा की असमान उपलब्धता की ओर संकेत करती है। अक्षर न पहचानना उसकी बुद्धि का अभाव नहीं। यह सामाजिक अवसर की कमी है। कविता पाठक को साक्षर कवि और निरक्षर पात्र के बीच शक्ति-अंतर से परिचित कराती है, पर संवाद के माध्यम से उस अंतर को आलोचना के लिए खोलती भी है। चंपा की वाणी कविता का अर्थ बदल देती है। वह कवि के कथन की निष्क्रिय प्राप्तकर्ता नहीं रहती।

प्रवासन इस कविता का दूसरा प्रमुख आयाम है। गाँव से पुरुष का शहर जाना केवल आर्थिक घटना नहीं। वह परिवार, प्रेम, श्रम-विभाजन और कल्पना को बदलता है। चंपा की उक्ति को शहर के प्रति भोली शत्रुता कह देना उसके अनुभव को छोटा करना होगा। ‘कलकत्ता’ यहाँ विशिष्ट नगर के साथ उस दूरस्थ मजदूरी-व्यवस्था का लक्षण है जो जीविका

देती है, पर संबंधों की निकटता छीनती है। 'बजर' का लोकविश्वास—आधारित शाप उस आर्थिक संरचना के विरुद्ध भावात्मक प्रतिरोध बन जाता है जिसे चंपा नीतिगत भाषा में व्यक्त नहीं कर सकती।

ग्राम और नगर का यह संबंध विलियम्स की उस धारणा की याद दिलाता है कि साहित्य में गाँव और शहर की छवियाँ आर्थिक इतिहास से जुड़ी होती हैं [4]। त्रिलोचन के यहाँ शहर सीधे दृश्य में न होकर अनुपस्थिति, पत्र, मजदूरी और प्रतीक्षा के माध्यम से गाँव में प्रवेश करता है। इससे स्पष्ट होता है कि 'स्थानीय' संस्कृति बाहरी प्रवाह से बंद नहीं।

पारिस्थितिकीय दृष्टि से प्रवासन भूमि पर दबाव, आजीविका की अनिश्चितता और श्रम के पुनर्वितरण से जुड़ता है। जब कार्यशील सदस्य बाहर जाते हैं, तब खेती और घरेलू काम का भार बदलता है। कविता इन परिवर्तनों के आँकड़े नहीं देती, पर चंपा के भाव में उनकी मानवीय कीमत दर्ज करती है। स्त्री की दृष्टि को केंद्र में रखे बिना कृषक—संस्कृति का अध्ययन अधूरा रहेगा।

14 नगई महरा का सांस्कृतिक पाठ

'नगई महरा' त्रिलोचन की कथात्मक क्षमता और ग्राम—संस्कृति की जटिल समझ का महत्वपूर्ण उदाहरण है। कविता नाम से आरंभ होती है यह नामकरण ही राजनीतिक है, क्योंकि साहित्यिक इतिहास में अनाम रह जाने वाले व्यक्ति को विशिष्ट पहचान मिलती है। नगई का जातिगत और पेशागत स्थान उसके साथ समुदाय के व्यवहार को प्रभावित करता है, लेकिन कविता उसे उस पहचान तक सीमित नहीं करती।

कथन की शैली में गाँव वालों की आवाजें, स्मृति और टिप्पणी मिलती हैं। इससे कोई एक सर्वज्ञ दृष्टि अंतिम सत्य का अधिकार नहीं रखती। पाठक विभिन्न कथनों के बीच सामाजिक निर्णय बनने की प्रक्रिया देखता है। अफवाह, सम्मानसूचक संबोधन और धार्मिकता का अर्थ संदर्भ के साथ बदलता है। 'भगताया' जैसे शब्द व्यक्ति और समुदाय के बीच तनाव की ओर संकेत करते हैं [10]।

कविता का सांस्कृतिक महत्व भोजन और अनुष्ठान के प्रसंगों में भी है। सामूहिक भोजन केवल पोषण नहीं स्वीकृति, शुद्धता, श्रेणी और सहभागिता का सामाजिक विधान बन सकता है। कौन बुलाया जाता है, कौन पकाता है, कौन साथ बैठता है और किस पर टिप्पणी होती है—इन प्रश्नों से ग्राम समाज की सत्ता दिखाई देती है। इसीलिए संस्कृति को उत्सव की सूची मानना पर्याप्त नहीं उसे दैनिक व्यवहार में पढ़ना आवश्यक है।

पारिस्थितिकीय दृष्टि से नगई का संसार श्रम और सीमित संसाधनों से बना है। व्यक्ति की नैतिकता को उसकी भौतिक परिस्थिति से अलग करके नहीं समझा जा सकता। गरीबी, पेशा और सामाजिक अपेक्षाएँ निर्णय की सीमा बनाते हैं। फिर भी त्रिलोचन नियतिवाद से बचते हैं पात्र की क्रिया और वाणी में सीमित पर वास्तविक एजेंसी रहती है।

यह कविता शोधकर्ता को पद्धतिगत शिक्षा देती है। बाहरी भाषा में समुदाय को तुरंत वर्गीकृत करने से पहले उसकी शब्दावली, प्रसंग और आवाजें सुननी चाहिए। साथ ही 'लोक' की आत्मीयता से इतना प्रभावित नहीं होना चाहिए कि जातिगत अनुशासन और सामाजिक दबाव अदृश्य हो जाएँ। त्रिलोचन का कथात्मक संतुलन सहानुभूति और आलोचना दोनों को संभव बनाता है।

नगई की उपस्थिति कृषक-काव्य की सीमा का विस्तार करती है। कृषि केवल खेत जोतने वाले स्वामी किसान की कथा नहीं उस समूचे श्रम-संबंध की कथा है जिसमें सेवा-समुदाय, मजदूर, कारीगर और घरेलू श्रमकर्ता शामिल हैं। इस व्यापकता से त्रिलोचन की ग्राम-दृष्टि सांस्कृतिक पारिस्थितिकी का रूप लेती है।

15 काव्य रूप सौंदर्य और आलोचनात्मक यथार्थ

त्रिलोचन की सरलता सहज प्राप्त गुण नहीं, सजग कलात्मक चयन है। बोलचाल जैसी पंक्ति भी लय, विराम और शब्द-क्रम से निर्मित होती है। उनके काव्य में सॉनेट का अनुशासन और लोकसंवाद की खुली गति दोनों मिलते हैं। यह संयोजन कृषक जीवन की द्वंद्वता के अनुरूप हैरू प्रकृति के चक्र में नियमितता है, जबकि सामाजिक जीवन में आकस्मिकता और संघर्ष।

बिंबों की ठोसता उनके पारिस्थितिक यथार्थ को विश्वसनीय बनाती है। धरती, पानी, धूप या फसल अमूर्त प्रतीक बनने से पहले भौतिक वस्तुएँ हैं। यही क्रम महत्वपूर्ण है। यदि मिट्टी को तुरंत मातृत्व या राष्ट्र का प्रतीक बना दिया जाए, तो उसकी नमी, उर्वरता और श्रम-संबंध गायब हो सकते हैं। त्रिलोचन का काव्य प्रतीकात्मकता को भौतिक अनुभव से जोड़कर रखता है।

विडंबना उनकी आलोचनात्मकता का प्रभावी साधन है। अन्नदाता की भूख, श्रमशील मनुष्य की सामाजिक हीनता, और कविता की शक्ति पर गरीब पात्र का अविश्वासकृये स्थितियाँ बिना ऊँचे घोष के व्यवस्था की विसंगति दिखाती हैं। पाठक को निष्कर्ष तैयार रूप में नहीं मिलताय उसे भाषा के अंतराल और पात्र की प्रतिक्रिया से अर्थ बनाना पड़ता है।

नामों का प्रयोग सौंदर्य और राजनीति दोनों है। चंपा और नगई जैसे नाम पात्र को याद रखने योग्य बनाते हैं। वे 'ग्रामीण स्त्री' या 'दलित मजदूर' जैसी सामान्य श्रेणियों की आवश्यकता को नकारते नहीं, पर इन श्रेणियों के भीतर व्यक्ति की विशिष्टता बचाते हैं। साहित्य का योगदान यही हैरू वह संरचना को अनुभव और चेहरे से जोड़ता है।

त्रिलोचन की कविता में करुणा भावुकता से भिन्न है। भावुकता दुख को निजी आँसू में सीमित कर सकती हैय करुणा दूसरे के जीवन-संबंधों को समझने और अन्याय पहचानने की क्षमता बनती है। कृषक-काव्य में सौंदर्य श्रम के सम्मान, भाषा की गरिमा और साझा संसार के प्रति उत्तरदायित्व से निर्मित होता है।

इसी कारण पारिस्थितिकीय और सांस्कृतिक पाठ काव्य-सौंदर्य का बाहरी जोड़ नहीं। कविता का रूप स्वयं संबंधों को व्यवस्थित करता हैकृकौन बोलता है, किसकी भाषा उद्धृत होती है, प्रकृति क्रिया में है या दृश्य में, और पाठक किस नैतिक स्थिति में रखा जाता है। त्रिलोचन की कलात्मक उपलब्धि इन प्रश्नों के उत्तर में दिखाई देती है।

16 तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य

हिंदी की प्रगतिशील कविता में नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल और त्रिलोचन ने ग्राम तथा श्रम को अलग-अलग काव्य-स्वर दिए। नागार्जुन की कविता में राजनीतिक व्यंग्य और प्रत्यक्ष प्रतिरोध तीव्र हैय केदारनाथ अग्रवाल में नदी, धरती और श्रम का उर्जस्वी रूप मिलता हैय त्रिलोचन संवाद, चरित्र और भाषिक निकटता के माध्यम से जनपदीय जीवन

खोलते हैं। यह तुलना किसी श्रेष्ठता-क्रम के लिए नहीं, त्रिलोचन की विशिष्ट पद्धति पहचानने के लिए उपयोगी है [13][14]।

त्रिलोचन का कृषक संसार प्रेमचंद की ग्रामीण कथा-परंपरा से भी संवाद करता प्रतीत होता है। दोनों में किसान का जीवन आर्थिक और सामाजिक संरचनाओं से घिरा है, पर माध्यम का अंतर महत्वपूर्ण है। उपन्यास व्यापक कथानक और संस्थागत संबंध विकसित कर सकता है कविता संक्षिप्त ध्वनि, बिंब और संवाद से अनुभव को तीव्र करती है। त्रिलोचन की लंबी कविता इस अंतर को रचनात्मक रूप से पुल करती है।

पर्यावरणीय लेखन की आधुनिक धाराओं में कभी 'निर्जन प्रकृति' को आदर्श माना गया, जबकि भारतीय कृषक जीवन में प्रकृति लंबे समय से मानव श्रम से रूपांतरित भू-दृश्य है। खेत न वन्य प्रकृति है, न पूर्णतः कृत्रिम परिसर। यह मनुष्य, बीज, मिट्टी, जल, पशु और तकनीक की संयुक्त रचना है। त्रिलोचन का काव्य इस मध्यवर्ती क्षेत्र को समझने में मदद करता है।

उनका योगदान 'पर्यावरण' को सामाजिक न्याय से जोड़ने में विशेष है। प्रकृति की रक्षा का प्रश्न किसान की आजीविका, भूमि-अधिकार और स्थानीय ज्ञान से अलग नहीं हो सकता। यदि संरक्षण नीति लोगों को उनके संसाधनों से बेदखल करे या कृषि नीति मिट्टी और जल की दीर्घकालिक क्षमता की अनदेखी करे, तो दोनों अधूरी हैं। कविता नीति नहीं बनाती, पर वह नीति की नैतिक भाषा को व्यापक करती है।

तुलनात्मक दृष्टि यह भी स्पष्ट करती है कि त्रिलोचन का लोकवाद पुनरुत्थानवादी नहीं। वे गाँव को नगर के विरुद्ध नैतिक रूप से शुद्ध क्षेत्र नहीं बनाते। अशिक्षा, जाति और अभाव गाँव के भीतर हैं अलगाव और बाजार का दबाव बाहर से आता है दोनों मिलकर पात्र का संसार बनाते हैं। यही द्विधात्मकता उनके कृषक-काव्य को आज भी आलोचनात्मक ऊर्जा देती है।

17 समकालीन प्रासंगिकता

इक्कीसवीं सदी में भारतीय कृषि जलवायु-अनिश्चितता, लागत-वृद्धि, भूमिखंडन, बाजार-जोखिम, जल-संकट और प्रवासन से प्रभावित है। इन समस्याओं के तकनीकी और आर्थिक समाधान आवश्यक हैं, पर सांस्कृतिक आयाम की उपेक्षा नहीं की जा सकती। कृषि केवल उत्पादन नहीं भोजन, भाषा, संबंध, स्थानीय ज्ञान और सामुदायिक स्मृति की व्यवस्था है। त्रिलोचन का कृषक-काव्य इस व्यापक अर्थ को समझने का संवेदनात्मक माध्यम है।

जलवायु परिवर्तन की भाषा प्रायः वैश्विक औसत और भविष्य के अनुमान में बोलती है। किसान इसे अनियमित वर्षा, बदले हुए बुवाई-समय, नए कीट, घटती नमी और आय की असुरक्षा में अनुभव करता है। त्रिलोचन की कविता हमें बड़े पर्यावरणीय विमर्श को स्थानीय अनुभव से जोड़ने की पद्धति देती है। वह बताती है कि संकट का अर्थ अलग समुदायों के लिए अलग होता है।

भाषिक दृष्टि से भी यह काव्य प्रासंगिक है। शिक्षा, मीडिया और बाजार में मानक भाषाओं के प्रसार से बोलियों के अनेक शब्द और अनुभव हाशिए पर जा सकते हैं। भाषिक विविधता का संरक्षण केवल साहित्यिक धरोहर की रक्षा नहीं कृषि और पर्यावरण के स्थानीय ज्ञान की रक्षा भी है। त्रिलोचन की कविता बोलियों को आधुनिक अभिव्यक्ति के योग्य सिद्ध करती है।

प्रवासन का प्रश्न 'चंपा' को नया अर्थ देता है। आज भी रोजगार के लिए दूर गए सदस्य और पीछे रह गए परिवार गाँव-शहर संबंध की मानवीय कीमत वहन करते हैं। संचार तकनीक दूरी कम कर सकती है, पर श्रम और देखभाल का वास्तविक पुनर्वितरण बना रहता है। चंपा की आवाज हमें आर्थिक अवसर की चर्चा में भावात्मक और लैंगिक आयाम जोड़ने के लिए बाध्य करती है।

शिक्षा के क्षेत्र में त्रिलोचन का पाठ पर्यावरणीय मानविकी, ग्रामीण अध्ययन और हिंदी साहित्य को जोड़ सकता है। छात्रों से केवल कविता का सार पूछने के बजाय स्थानीय कृषि शब्दों, जल-स्रोतों, मौसमी बदलावों और परिवार की स्मृतियों पर परियोजनाएँ कराई जा सकती हैं। इससे पाठ जीवित अनुभव से जुड़ता है और किसान को पिछड़ेपन के प्रतीक की बजाय ज्ञान-निर्माता के रूप में देखने की क्षमता विकसित होती है।

सबसे महत्वपूर्ण यह कि त्रिलोचन विकास की भाषा में गरिमा का प्रश्न जोड़ते हैं। किसी योजना की सफलता केवल उत्पादन-वृद्धि से नहीं, इस बात से भी मापी जानी चाहिए कि श्रम करने वाले समुदाय की आवाज, अधिकार और पर्यावरणीय सुरक्षा कितनी मजबूत हुई।

18 निष्कर्ष और प्रमुख निष्पत्तियाँ

अध्ययन से पहली प्रमुख निष्पत्ति यह सामने आती है कि त्रिलोचन के कृषक-काव्य में प्रकृति स्वतंत्र सजावटी पृष्ठभूमि नहीं, जीवन और उत्पादन की सक्रिय शर्त है। धरती, जल, ऋतु, वनस्पति और पशु कृषक के श्रम, समय और स्मृति को आकार देते हैं। इस संबंध में आत्मीयता है, पर जोखिम भीय सौंदर्य है, पर अभाव भी। यही द्वंद्व कविता को रोमानी ग्राम-चित्रण से अलग करता है।

दूसरी निष्पत्ति यह है कि पारिस्थितिकी और संस्कृति को अलग नहीं पढ़ा जा सकता। कृषि-पर्यावरण भाषा, परिवार, जाति, वर्ग, स्त्री-श्रम, अनुष्ठान और प्रवासन से निर्मित होता है। संसाधनों तक पहुँच सामाजिक शक्ति पर निर्भर हैय इसलिए पर्यावरणीय प्रश्न न्याय का प्रश्न भी है। त्रिलोचन भूख और श्रम के माध्यम से इस संबंध को तीक्ष्ण बनाते हैं।

तीसरी निष्पत्ति उनकी भाषिक नीति से संबंधित है। लोकभाषा और नामधारी पात्रों को केंद्र में रखकर वे अनुभव की सांस्कृतिक विशिष्टता बचाते हैं। 'अच्छर', 'भूखा दूखा' या 'भगताया' जैसे प्रयोग मानक भाषा के बाहर स्थित ज्ञान और भावना को वैधता देते हैं। संवाद की संरचना पात्र को बोलने देती है और कवि के अधिकार को सीमित करती है।

चौथी निष्पत्ति यह है कि त्रिलोचन ग्राम-संस्कृति का अंध उत्सव नहीं करते। सामुदायिक सहयोग के साथ जातिगत अनुक्रम, लोकापवाद, निरक्षरता और आर्थिक विवशता दिखाई देती है। शहर भी केवल भ्रष्ट बाहरी शक्ति नहींय वह अवसर और विछोह दोनों का स्थल है। यह संतुलित दृष्टि उनके काव्य को सांस्कृतिक आलोचना की विश्वसनीय भूमि बनाती है।

पाँचवीं निष्पत्ति काव्य-सौंदर्य की है। ठोस बिंब, बोलचाल की लय, विडंबना, सॉनेट का अनुशासन और कथात्मक विस्तार सामाजिक अनुभव को कलात्मक रूप देते हैं। पारिस्थितिकीय अर्थ कविता पर बाहर से लगाया गया ढाँचा नहींय वह रूप और भाषा के भीतर कार्य करता है।

अंततः, त्रिलोचन का कृषक-काव्य वर्तमान जलवायु और कृषि संकट में इसलिए प्रासंगिक है कि वह समाधान का तैयार नुस्खा नहीं, संबंधों को देखने की नैतिक दृष्टि देता है। वह याद दिलाता है कि मिट्टी की सेहत, जल की उपलब्धता,

श्रम की गरिमा, भाषा की बहुलता और सामाजिक समानता एक-दूसरे से जुड़ी हैं। हिंदी साहित्य में उनकी उपलब्धि इसी समग्रता में है। वे किसान को करुणा के दूरस्थ विषय से उठाकर पर्यावरण, संस्कृति और न्याय के केंद्र में स्थापित करते हैं।

अनुसंधान की संभावित दिशाएँ

आगे के शोध में त्रिलोचन के समस्त संग्रहों का कृषि-शब्दावली आधारित डिजिटल मानचित्रण, नागार्जुन और केदारनाथ अग्रवाल से तुलनात्मक अध्ययन, अवधी पर्यावरणीय शब्दों का कोश, तथा ग्रामीण स्त्री-श्रम की विस्तृत पाठ-व्याख्या की जा सकती है। विभिन्न संस्करणों की पाठांतर-समीक्षा से उद्धरण और पृष्ठ-संदर्भ भी अधिक निश्चित किए जा सकेंगे।

संदर्भ सूची

- [1] त्रिलोचन. ताप के ताए हुए दिन. नई दिल्लीरू राजकमल प्रकाशन, पुनर्मुद्रित संस्करण, 2009.
- [2] त्रिलोचन. प्रतिनिधि कविताएँ. चयन एवं संपादनरू केदारनाथ सिंह. नई दिल्लीरू राजकमल प्रकाशन, 2008.
- [3] Glotfelty, Cheryl and Harold Fromm, eds. The Ecocriticism Reader: Landmarks in Literary Ecology. Athens: University of Georgia Press, 1996.
- [4] Williams, Raymond. The Country and the City. London: Chatto and Windus, 1973.
- [5] त्रिलोचन. उस जनपद का कवि हूँ. नई दिल्लीरू वाणी प्रकाशन, विभिन्न संस्करण.
- [6] शुक्ल, ध्रुव, संपा. त्रिलोचन संचयिता. नई दिल्लीरू महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, 2002.
- [7] Buell, Lawrence. The Environmental Imagination: Thoreau, Nature Writing, and the Formation of American Culture. Cambridge, MA: Harvard University Press, 1995.
- [8] Guha, Ramachandra. Environmentalism: A Global History. New York: Longman, 2000.
- [9] त्रिलोचन. 'उस जनपद का कवि हूँ'. हिन्दवी, ऑनलाइन कविता-पाठ, अभिगमन 10 सितंबर 2026.
- [10] त्रिलोचन. 'नगई महरा'. हिंदी समय, ऑनलाइन कविता-पाठ, अभिगमन 10 सितंबर 2026.
- [11] राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद. आरोह भाग 1, कक्षा 11: 'चंपा काले काले अच्छर नहीं चीन्हती'. नई दिल्लीरू एनसीईआरटी, विभिन्न पुनर्मुद्रण.
- [12] चौहान, चंचल. 'त्रिलोचन की कविताई'. आलोचनात्मक आलेख, 2009.
- [13] नागार्जुन. प्रतिनिधि कविताएँ. नई दिल्लीरू राजकमल प्रकाशन, विभिन्न संस्करण.
- [14] अग्रवाल, केदारनाथ. प्रतिनिधि कविताएँ. नई दिल्लीरू राजकमल प्रकाशन, विभिन्न संस्करण.
- [15] प्रसाद, गोविंद, संपा. त्रिलोचन के बारे में. नई दिल्लीरू वाणी प्रकाशन, 1994.

- [16] रमेश, दिविक और कमलकांत द्विवेदी. साक्षात त्रिलोचन. नई दिल्लीरू प्रकाशन संस्थान, 1990.
- [17] Garrard, Greg. Ecocriticism. 2nd ed. London: Routledge, 2012.
- [18] Nixon, Rob. Slow Violence and the Environmentalism of the Poor. Cambridge, MA: Harvard University Press, 2011.

ऑनलाइन स्रोत

- हिन्दवी. 'उस जनपद का कवि हूँ'. <https://www.hindwi.org/> (अभिगमनरू 10 सितंबर 2026).
- हिंदी समय. 'त्रिलोचनरू नगई महरा'. <https://www.hindisamay.com/> (अभिगमनरू 10 सितंबर 2026).
- Google Books. Trilochan, Pratinidhi Kavitaen तथा Taap Ke Taye Hue Din के प्रकाशकीय और ग्रंथसूची विवरण (अभिगमनरू 10 सितंबर 2026).

उद्धृत रचनाओं का संकेत

रचना	मुख्य सांस्कृतिक प्रश्न	पारिस्थितिकीय संबंध
उस जनपद का कवि हूँ	भूख, प्रतिनिधित्व, जनपद	भूमि, आजीविका और न्याय
चंपा	स्त्री, शिक्षा और प्रवासन	गाँव—नगर तथा श्रम—वितरण
नगई महरा	जाति, समुदाय और लोकापवाद	संसाधन, श्रम और सामाजिक स्थान